वैश्वीकरण और हिंदी साहित्य का विकास

महादेवी कणवी

हिंदी विभागध्यक्ष, के.एल.ई संस्था का जी.एच. महाविद्यालय, हावेरी, कर्नाटक.

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17263765

ABSTRACT:

प्रस्तुत शोध-पत्र वैश्वीकरण और उदारीकरण के कारण हिंदी भाषा और साहित्य के विश्वव्यापी विकास का विश्लेषण करता है। इसमें बताया गया है कि भारतीय संस्कृति के प्रति बढ़ते आकर्षण के चलते हिंदी को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 200 से अधिक विश्वविद्यालयों में पढ़ाया जा रहा है। लेख प्रमुख रूप से आर्थिक कारकों पर बल देता है, जहाँ उदारीकरण ने हिंदी को भारतीय बाजार की एक अनिवार्य वाणिज्यिक भाषा बना दिया है। मीडिया, सिनेमा और विदेशी विज्ञापनों में हिंदी की प्रमुखता इस बात की पुष्टि करती है। इसके अतिरिक्त, प्रवासी भारतीयों की बड़ी आबादी हिंदी को सांस्कृतिक अस्मिता के संरक्षण का माध्यम मानती है। यह अध्ययन मॉरीशस, जापान, अमेरिका और पड़ोसी देशों सहित विश्व भर में हिंदी शिक्षण की मौजूदा व्यवस्थाओं का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करता है, जो हिंदी के एक महत्वपूर्ण विश्व भाषा के रूप में स्थापित होने की पुष्टि करता है।

KEYWORDS:

वैश्वीकरण, हिंदी साहित्य, उदारीकरण, प्रवासी भारतीय, विश्व भाषा.

विश्व में भारतीय संस्कृति, सभ्यता और समाज का विशेष आकर्षण है। हिंदी भाषा-साहित्य में विश्व की इन आकर्षण की माँग पूरी होती है। आज अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी को सीखा जा रहा है। दुनिया के विभिन्न कोनों में हिंदी साहित्य को महत्त्व मिल रहा है। विश्व के 200 विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाया जा रहा है। विश्व के अनेक देशों में व्यापारिक और राजनीतिक कारणों से, धार्मिक आस्था के कारण रामायण महाभारत को महत्त्व है। सांस्कृतिक आकर्षण के कारण यहाँ के शास्त्र, आगम की पढ़ाई होती है। भारत का योग और आयुर्वेद को दुनियाभर में माँग है। इससे जुड़ी किताब और साहित्य की जनप्रियता देखने को मिलती है।

विदेशों में धर्म का प्रचार भी खूब हो रहा है। इस उद्देश्य की आपूर्ति के लिए लिखे गए साहित्य विश्व के कोने-कोने में हैं। भारत के महान विभूति जैसे भगवान बुद्ध, बसवेश्वर, गांधीजी, अम्बेडकर लोगों का साहित्य, उनके जीवन मूल्य को दर्शानेवाले साहित्य को ख़ास विदेशी लोगों के लिए रचा जा रहा है।

विश्व में 100 से भी अधिक देशों में प्रवासी भारतीयों की संख्या है। लाखों की संख्या में प्रवासी भारतीय कामकाज के संदर्भ में विदेश में रहते हैं। वहाँ आत्मीयता को महसूस करने के लिए वे निश्चित रूप में हिंदी का प्रयोग करते हैं। दुनिया भर में भारत के लोगों में अपनी सांस्कृतिक अस्मिता के संरक्षण की भावना हिंदी भाषा से ही महसूस होती है।

तेजी से विकसित हो रही अर्थव्यवस्था, संचार माध्यम का प्रभाव, वैश्वीकरण एवं उदारीकरण के कारण हिंदी का विकास हो पाया है। उदारीकरण ने हिंदी को बाजार की भाषा बनाया है क्योंकि पूंजीवादी देशों के लिए भारत एक बहुत बड़ा बाजार के रूप में विस्तार पाया है। पिज़्ज़ा हो या बर्गर, बेचने के लिए हिंदी विज्ञापनों का सहारा लेना ही पड़ता है। हिंदी के विस्तार एवं उसे लोकप्रिय बनाने में मीडिया, टेलीविजन का प्रभाव अधिक है। केवल अंग्रेजी में विज्ञापन या कार्यक्रम दिखाकर वे भारत में अपनी चीज नहीं बेच सकते। भारत का बाजार अंग्रेजी का नहीं, हिंदी का बाजार है, इसलिए जो कोई भी यहाँ व्यापार करना चाहता है या बाजार का इस्तेमाल करना चाहता है, तो उसे हिंदी

सीखना ही पड़ेगा। विदेशी चैनल, दूरदर्शन और विज्ञापन, सिनेमा सभी हिंदी पर निर्भर हैं।

वैश्वीकरण के कारण विदेशों में भी हिंदी के प्रति आकर्षण बढ़ रहा है। अनेक देशों में हिंदी अनुवादक और शिक्षक की माँग बढ़ रही है। विश्व के तमाम व्यापारियों को अपने वाणिज्यिक और व्यावसायिक उत्पादन का बड़े पैमाने पर व्यापार भारत देता आ रहा है। इन उद्देश्य की आपूर्ति के लिए अपने उत्पादन की गुणवत्ता का प्रचार के लिए सरल, स्पष्ट और संक्षिप्त, नम्रतापूर्ण भाषा का उपयोग होना चाहिए। यह गुण हिंदी भाषा में होने के कारण व्यवसाय के क्षेत्र में हिंदी को अपनाया जा रहा है। भारत सरकार ने विदेश में स्थित अपने दूतावास तथा उच्च आयोग के माध्यम से विभिन्न प्रकार की व्यवस्था की है। विदेश मंत्रालय तथा भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद भी समय-समय पर हिंदी के विद्वान तथा शिक्षक को विश्व के विभिन्न विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा तथा साहित्य के अध्यापन के लिए भेजते रहते हैं। दूसरी ओर भारत के विश्वविद्यालय और संस्थानों में भी विदेशी व्यक्ति हिंदी पढ़ने के लिए और पढ़ाने के लिए आते हैं।

राजनीतिक दल चुनाव प्रचार के संदर्भ में हिंदी का प्रयोग करते हैं। मोदी जी ने हिंदी का प्रयोग करते हुए हिंदी भाषा को माँ का स्थान प्रदान किया। इस कारण और प्रवासी भारतीयों के दिलों में हिंदी के प्रति विशेष रुचि उत्पन्न हो गई। अपने अधिकार अवधि में प्रधानमंत्री जी अनेक बार विदेश यात्रा कर चुके हैं। उनके अधिकतर भाषण हिंदी में हैं। अन्य देशों के राजनीतिक गतिविधियों में धीरे-धीरे हिंदी का स्थान है। अमेरिका के अध्यक्ष के चुनाव के संदर्भ में 'अब की बार ट्रंप सरकार' का नारा गूंज रहा था।

विश्व में प्रयोगकर्ताओं की दृष्टि से हिंदी का स्थान तीसरे नंबर पर है। लेकिन चीनी भाषा बोलने वालों की संख्या दूसरे नंबर पर है, परंतु उस भाषा का प्रयोग क्षेत्र हिंदी भाषा के प्रयोग क्षेत्र से कम है। अंग्रेजी भाषा का प्रयोग क्षेत्र हिंदी भाषा की अपेक्षा अधिक है, किंतु मातृभाषा भाषियों की संख्या अंग्रेजी से अधिक है।

1985 में 'दक्षेस' अर्थात 'दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन' की स्थापना हुई। इसका मुख्यालय नेपाल की राजधानी काठमांडू में है।

इस संगठन के सात सदस्य देश हैं, वे हैं- भारत, पाकिस्तान, नेपाल, बांग्लादेश, श्रीलंका, भूटान तथा मालदीव। इस संगठन का मुख्य उद्देश्य है, दक्षिण एशिया के लोगों के कल्याण के लिए प्रयास करना। इस क्षेत्र में शांति और सुरक्षा पूर्ण वातावरण तैयार करना। इस क्षेत्र में आर्थिक और सांस्कृतिक विकास के लिए प्रयास करना। इस क्षेत्र से आतंकवाद को समाप्त करना है। इन उद्देश्य की आपूर्ति के लिए ये देश आपस में दूतावास का स्थापित कर परस्पर आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान की दिशा में काम करते हैं।

उपनिवेशवाद के संदर्भ में अंग्रेजों ने भारतीयों को बंधक बनाकर दूसरे देशों में ले गए। ये लोग जाते समय धार्मिक आस्था के कारण से अपने रामायण, महाभारत भी साथ में ले गए। मॉरीशस देश के प्रत्येक घर में रामायण उपलब्ध है, लेकिन वहाँ लोग अंग्रेजी बोलते हैं। इन सभी देशों में हिंदी के संरक्षण और विकास पर जोर दिया जा रहा है। धीरे-धीरे हिंदी भाषा भावना की भाषा के रूप में विकसित हो रही है। इन देशों में भाषा और संस्कृति के प्रति भाव ही प्रधान है।

भारत के अलावा जापान देश में भी हिंदी भाषा का प्रसार है। भारत और जापान के बीच बौद्ध धर्म के माध्यम से 6वीं सदी से पारस्परिक व्यवहार होने लगे थे। 17वीं और 18वीं सदियों के दौरान जापान बाहर की दुनिया से कट कर अकेला हो गया था। आधुनिक युग में जनतांत्रिक मूल्य, धार्मिक स्वतंत्रता, और मानव अधिकारों की स्थापना के साथ जापान फ्रांसीसी और जर्मन शिक्षण व्यवस्था में नए सुधार लाए गए। जापान में 1908 में ही हिंदी को हिंदुस्तानी भाषा को पढ़ाने का आरंभ किया गया था। द्वितीय महायुद्ध के समय 1945 में जापान के दो नगर हिरोशिमा व नागासाकी पर एटम बम डाले जाने के बाद, भारत ब्रिटिश सत्ता की गुलामी से मुक्त होने के बाद, 1952 में भारत और जापान के बीच राजनीतिक संबंधों की स्थापना के और पारस्परिक सांस्कृतिक संबंधों की नई दिशा देने के लिए आर्थिक, व्यापारिक सहयोग को निरंतर मजबूत बनाते गए। विविध रूप से दोनों देश आपसी सहकारी बन गए। भारत में स्थापित जापानी दूतावास और जापान में स्थापित भारतीय दूतावास के कर्मचारी, अधिकारी और राजनीतिक हिंदी के विद्यार्थी रह चुके हैं। वे हिंदी की उच्च स्तरीय पढ़ाई कर चुके हैं। जापानी लोग भारतीयों से अंग्रेजी के माध्यम से नहीं, हमारी अपनी भाषा और उनकी अपनी

मातृभाषा में संपर्क करना पसंद करते हैं। यही कारण है कि जापान में हिंदी विद्वानों और हिंदी प्रेमियों की अच्छी खासी संख्या है। उन्होंने शिक्षण, नाट्य मंचन, लेखन, अनुवाद, संपादन आदि विविध हिंदी गतिविधियों में स्वयं को संलग्न रखा है।

ओसाका विश्वविद्यालय, ओसाका, टोकियो यूनिवर्सिटी ऑफ़ फॉरेन स्टडीज, इन जापानी विश्वविद्यालयों में उच्च स्तरीय हिंदी पढ़ाई जाती है। हिंदी संबंधी गतिविधियों का संचालन करती है। हिंदी सिखाने वाले रेडियो कार्यक्रमों का प्रसारण होता है। अनेक विद्वान हिंदी-जापानी या जापानी-हिंदी में अनुवाद कार्य करते हैं। कुछ भारतीयों ने जापान में रहकर हिंदी की सेवा की है। जापान और हिंदी का संबंध जितना पुराना है, उतना ही सक्रिय पूर्ण भी है। जापानी लोग तो भारत की यात्रा करते रहते हैं।

विदेश में हिंदी शिक्षण अलग-अलग रूप में दी जाती है। विदेश में हिंदी शिक्षण, अध्ययन, अध्यापन की व्यवस्था को हम तीन भागों में विभाजित कर सकते हैं:

1. प्रवासी भारतीयों की विपुल आबादी वाले देश,
2. भारत के पड़ोसी देश,
3. अन्य देश।

प्रवासी भारतीयों की विपुल आबादी वाले देश: जिन देशों में अधिक संख्या में भारतीय मूल के लोग रहते हैं, उन देशों में हिंदी कक्षाएँ संचालित होती हैं।

» मॉरीशस देश में 52% प्रवासी भारतीय हैं। यहाँ 300 स्कूलों में हिंदी प्राथमिक स्तर और माध्यमिक स्तर पर पढ़ाया जाता है। पी.जी. डिप्लोमा और स्नातक तक की भी पढ़ाई यहाँ होती है।

» फिजी देश में 51% भारतीय मूल के लोग हैं। वहाँ पहली और दूसरी कक्षाओं में हिंदी माध्यम से शिक्षण पढ़ाया जाता है। टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज में भी हिंदी पढ़ाया जाता है। यहाँ हिंदी फिल्में और गाने लोकप्रिय हैं।

» सूरीनाम देश में प्रवासी भारतीय संख्या 40% प्रतिशत से कम है।

यहाँ के लोग सनातन में हिंदी का प्रयोग करते हैं। सनातन धर्म सभा में और अन्य स्कूलों में हिंदी का अध्ययन विषय स्वरूप से किया जाता है। सूरीनामी हिंदी परिषद भी यहाँ कार्यरत है।

» गयाना देश में प्रवासी भारतीयों की संख्या 51% है। यहाँ के माध्यमिक स्कूलों में आठवीं तक हिंदी में पढ़ने की व्यवस्था है। विश्वविद्यालय में भी हिंदी पढ़ाया जाता है। हिंदी प्रचार योजना के अंतर्गत यहाँ हिंदी का विकास हो रहा है।

» ट्रिनिडाड और सूरीनाम यहाँ लगभग 40% प्रवासी भारतीय हैं। यहाँ के स्कूल आफ लैंग्वेज में हिंदी अध्यापक काम करते हैं।

भारत के पड़ोसी देशों में हिंदी का शिक्षण

» पाकिस्तान के इस्लामाबाद के स्कूल ऑफ़ मॉडर्न लैंग्वेज में हिंदी अध्ययन की व्यवस्था है। कराची, इस्लामाबाद तथा लाहौर विश्वविद्यालय में भी हिंदी पढ़ाई जाती है।

» बांग्लादेश के ढाका विश्वविद्यालय में हिंदी 4 वर्षों का भाषा पाठ्यक्रम है।

» श्रीलंका के विश्वविद्यालयों में हिंदी के अध्ययन, अध्यापन की व्यवस्था है। कलानिया, जयवर्धनपुर, वैलनी, परदोनी विश्वविद्यालय, सुमित्रा देवी विश्वविद्यालय, पेरीबेन, भारतीय उच्चायोग, हिंदी प्रचार सभा, कोलंबो हिंदी समाज आदि में हिंदी का अध्ययन के साथ साहित्य रचना भी होती है।

» नेपाल में त्रिभुवन विश्वविद्यालय, काठमांडू विश्वविद्यालय आदि में हिंदी की बी.ए. और एम.ए. की पढ़ाई होती है। नेपाल के लगभग 20 कॉलेज में हिंदी पढ़ाई जाती है। भूटान, म्यांमार में भी हिंदी का अध्ययन होता है।

अन्य देशों में हिंदी शिक्षण:

» संयुक्त राज्य अमेरिका के 24 विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती है। इनमें प्रमुख हैं: शिकागो विश्वविद्यालय, कैलिफ़ोर्निया विश्वविद्यालय, विस्कॉन्सिन विश्वविद्यालय, कोलंबिया विश्वविद्यालय, पेन्सिलवेनिया विश्वविद्यालय, वॉशिंगटन

विश्वविद्यालय, टेक्सास विश्वविद्यालय, वर्जीनिया विश्वविद्यालय में स्नातक स्तर पर हिंदी पढ़ाई जाती है।

» कनाडा देश में यूनिवर्सिटी ऑफ़ ब्रिटिश कोलंबिया में, मार्शल विश्वविद्यालय में हिंदी पढ़ाई जाती है।

» रूस देश के मास्को में प्राच्य अध्ययन संस्थान, पेपर्स जीवित प्राच्य भाषा संस्थान, मास्को स्टेट यूनिवर्सिटी आदि विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती है।

» लंदन देश में प्रवासी भारतीयों के लिए हिंदी शिक्षण एक सांस्कृतिक जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यहाँ लंदन विश्वविद्यालय, कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय और इंग्लैंड के अनेक शैक्षिक संस्थाएं हिंदी पढ़ने का काम कर रही हैं।

» जर्मन में हिंदी साहित्य का अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था है। स्वीटजरलैंड, डेनमार्क, नॉर्वे, स्वीडन, इटली, पोलैंड, चेक गणराज्य, हंगरी, दक्षिण अफ्रीका, जापान, दक्षिण कोरिया, चीन, ऑस्ट्रेलिया आदि देशों में हिंदी अध्ययन, अध्यापन की व्यवस्था है।

हिंदी भाषा अब भारत की भाषा नहीं, विश्व की भाषा बनी है। विदेश में लिखे जाने वाले साहित्य में दो प्रकार का साहित्य है:

1. एक मूल प्रवासी जो गिरमिटिया मजदूर थे, जो लगभग 200 सालों से विदेश में रह रहे हैं, उनका साहित्य।
2. दूसरे प्रकार का साहित्य वह है, आजकल के अनेक लोग नौकरी आदि के लिए विदेश में चले जाते हैं और वहाँ साहित्य रचना अथवा पाठ्यक्रम की रचना करते हैं।

विश्व के अनेक देशों में हिंदी का शिक्षण केवल प्रवासी भारतीय बच्चों के लिए नहीं है, विदेशी बच्चे भी हिंदी सीखते हैं। चीन देश में वहाँ के जवानों को हिंदी सिखाया जाता है ताकि वह सीमावर्ती भारतीयों के साथ वार्तालाप कर सके। विदेश में हिंदी भाषा का आकर्षण भारतीय सिनेमा, गीत-संगीत, भारतीय फिल्म के सिनेमा के गीत और मनोरंजन है।

संदर्भ ग्रंथ:

1. आकर संक्रमण काल में संजना 25वाँ रजत जयंती अंक
2. बहुवचन 38 जुलाई-सितंबर 2013
3. गवेषणा केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा अंक 105
4. हिंदी और उसका अखिल भारतीय प्रयोग बृजेश्वर वर्मा
5. वाणिज्य और व्यापार की भाषा के रूप में हिंदी कृष्ण कुमार गोस्वामी
6. सांस्कृतिक अस्मिता के संदर्भ में हिंदी के विविध रूप एल. सुनीता बाय
7. पूर्वोत्तर का भाषाई परिदृश्य और हिंदी की स्थिति वीरेंद्र परमार
8. अंडमान तथा निकोबार में हिंदी व्यासदेव त्रिपाठी
9. भारत के पड़ोसी देशों में हिंदी अरुण चतुर्वेदी
10. जापान में हिंदी एक आकलन हरेंद्र चौधरी
11. विदेश में हिंदी की संभावनाएं और भविष्य डॉ. मोतीलाल गुप्त 'आदित्य' नया संचार samachar.com

Funding:
This study was not funded by any grant.

Conflict of interest:

The Authors have no conflict of interest to declare that they are relevant to the content of this article.

About the License:

© The Authors 2024. The text of this article is open access and licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.